इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मानविकी विद्यापीठ (एसओएच)

(SOH)

एम.ए. वैदिक अध्ययन

(MAVS)

कार्यक्रम दर्शिका

Programme Guide

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110068
ईमेल- sohignou.ac.in.

1. प्रस्तावना

वैदिक अध्ययन कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय विद्या से अवगत कराना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मन्तव्यों का पालन भी इसका निहितार्थ है। समाज के सभी वर्गों को वैदिक ज्ञान से परिचित कराना इस कार्यक्रम का प्रमुख प्रयोजन है । मान्यता के अनुसार वेद ही सभी विद्याओं के मूल हैं। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, राष्ट्रप्रेम, नैतिक मूल्य, साहित्य के स्रोत, धातु विज्ञान, कृषि विज्ञान, और अनेक प्रकार की विद्याओं का मूल स्रोत वैदिक ज्ञान राशि ही है। सरल हिन्दी भाषा में लिखित सामग्री के द्वारा सभी को इसकी जानकारी प्राप्त होगी। इस कार्यक्रम का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थी समाज के लिए भी उपयोगी होगा, देश के लिए सफल नागरिक सिद्ध होगा, रोजगार की दृष्टि से भी अग्रसर होगा । चारित्रिक निर्माण में भी सफल होगा। विषय ज्ञान के साथ-साथ रोजगार के प्रति प्रेरित करना और समस्त मानवता को वैदिक ज्ञान के अनुसार अपने व्यवहार से संतुलित रखना तथा योग्यतम होने की क्षमता विकसित करना भी इस कार्यक्रम में सन्निहित है।

2. प्रवेश के लिए योग्यता : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक अथवा उच्चतर उपाधि ।

3. शिक्षा का माध्यम: हिन्दी

4. अवधि : न्यूनतम 2 वर्ष एवं अधिकतम 4 वर्ष, जुलाई तथा जनवरी दोनों प्रवेश सत्रों में उपलब्ध है।

5. शुल्क विवरण : नियमानुसार प्रतिवर्ष प्रवेश एवं परीक्षा शुल्क

6. **विशेष:** 32 क्रेडिट का अध्ययन पूर्ण कर लेने वाले विद्यार्थी को द्वितीय वर्ष में अध्ययन छोड़ देने पर प्रवेश एवं निकास की विधि से पी.जी डिप्लोमा प्रदान किए जाने का प्रावधान है ।

7. **प्रवेश हेतु अधोलिखित लिंक का प्रयोग करें–**

Link for ODL mode Programmes Admission Portals ***https://ignouadmission.samarth.edu.in***

https://ignouadmission.samarth.edu.in/

8. क्रेडिट पद्धति : एम.ए. वैदिक अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत क्रेडिट प्रणाली में कुल 64 क्रेडिट का निर्धारण किया गया है। यह कार्यक्रम वार्षिक प्रणाली की विधि से संचालित है । प्रथम वर्ष के चार पाठ्यक्रमों की कुल 32 क्रेडिट है । इसी प्रकार द्वितीय वर्ष का भी निर्धारण किया गया है।

9. शिक्षण प्रविधि : यह कार्यक्रम छात्रोन्मुखी ओडीएल शिक्षा पद्धति पर आधारित है। 8 क्रेडिट के प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए विषय विशेषज्ञों द्वारा लिखित पाठ्यसामग्री के साथ- साथ विषय के विद्वानों द्वारा निर्धारित पाठ्यसामग्री पर वीडियो लेक्चर आदि उपलब्ध कराये जाने की भी व्यवस्था है ।

10. ई- पाठ्य सामग्री: विद्याथियों की सुविधा के लिए अध्ययन सामग्री की पीडीएफ फाइल विश्वविद्यालय की वेबसाइट ignou.ac.in के ई- ज्ञान कोश http://egyankosh.ac.in / पटल पर उपलब्ध होगी ।

11. सत्रीय कार्य **(Assignment)** विद्यार्थियों को असाइनमेंट भी बनाना होगा जिसका प्रश्न पत्र वेबसाइट के पटल पर अपलोड होगा, उसकी प्रिंट निकाल कर एक- एक पेपर का उत्तर अलग-अलग लिखकर अपने स्टडी सेंटर में विद्यार्थियों द्वारा जमा किया जाएगा । यह कार्य सभी के लिए अनिवार्य है ।

12. कार्यक्रम का विवरण - कुल 64 क्रेडिट

पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट
एम .ए. वैदिक अध्ययन प्रथम वर्ष (32 क्रेडिट)		
MVS-001	वेद-वेदांग परिचय	08
MVS-002	संहिता एवं ब्राह्मण	08
MVS-003	आरण्यक एवम् उपनिषद्	08
MVS-004	निरुक्त एवं प्रातिशाख्य	08
एम .ए. वैदिक अध्ययन द्वितीय वर्ष (32 क्रेडिट)		
MVS-005	छन्दस् एवं कल्प	08
MVS-006	वेदाध्ययन परम्परा	08
MVS-007	वैदिक देवतत्व एवं विज्ञान	08
MVS-008	वैदिक गणित एवं सृष्टिविज्ञान	08

कार्यक्रम समन्वयक - डॉ देवेश कुमार मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली Emaildkmisr@ignou.ac.in
01129572788

कार्यक्रम – एम0 ए0 वैदिक अध्ययन
MAVS
प्रथम वर्ष–(अनिवार्य)
प्रथम पाठ्यक्रम – वेद–वेदांग परिचय

08 क्रेडिट

प्रथम खण्डः (संहिता एवं ब्राह्मण)

वेद शब्द के विभिन्न अर्थ एवं तात्पर्य, ऋषि तत्व एवं वैदिक शाखाएं
ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता (सामगान प्रविधि) अथर्ववेद संहिता
संहिताओं का स्वरूप एवं प्रतिपाद्य
ब्राह्मण साहित्य
ब्राह्मणों का स्वरूप एवं प्रतिपाद्य

द्वितीय खण्डः (आरण्यक एवम् उपनिषद)

आरण्यक साहित्य
आरण्यक शब्द का तात्पर्य, आरण्यकों का स्वरूप एवं प्रतिपाद्य
उपनिषद साहित्य
उपनिषद का तात्पर्य, स्वरूप एवं प्रतिपाद्य
उपनिषदों से प्राप्त शिक्षाएँ

तृतीय खण्डः (वेदांग– शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त एवं छन्द)

शिक्षा ग्रन्थों का स्वरूप, प्रयोजन एवं प्रतिपाद्य
.व्याकरण के कुछ प्रमुख आचार्य
व्याकरण का प्रयोजन स्वरूप एवं ग्रन्थ
निरुक्त का प्रयोजन एवं उसका प्रतिपाद्य
छन्दों का प्रयोजन तथा सम्बद्ध ग्रन्थ

चतुर्थ खण्डः (वेदांग– कल्प एवं ज्योतिष)

कल्प शब्द का अर्थ और प्रयोजन
श्रौत सूत्र एवं गृह्य सूत्र
र्धमसूत्र एवं शुल्ब सूत्र
ज्योतिष का प्रयोजन, प्रतिपाद्य तथा सम्बद्ध ग्रन्थ
ज्योतिष के प्रमुख आचार्यो का परिचय

प्रथम वर्ष–(अनिवार्य)

द्वितीय पाठ्यक्रम – संहिता एवं ब्राह्मण

08 क्रेडिट

प्रथम खण्डः (ऋग्वेद संहिता)

अग्नि, विष्णु, इन्द्र और सवितृ सूक्तों पर आधारित देवताओं का स्वरूप एवं, वैशिष्ट्य
पुरूरवा–उर्वशी, यमयमी, सरमा–पणि, विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त का स्वरूप व वैशिष्ट्य
वाक्, हिरण्यगर्भ, नासदीय, अस्यवामीय सूक्तों का दार्शनिक स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
अक्ष सूक्त और संज्ञान सूक्त की व्याख्या एवं सामाजिक वैशिष्ट्य
दानसूक्त 10/17 तथा सोम–सूर्या विवाह सूक्त की व्याख्या एवं सामाजिक वैशिष्ट्य

द्वितीय खण्डः (यजुर्वेद एवं अथर्ववेदं)

शिवसंकल्प 34–1/6, पुरूष सूक्त उत्तम नारायण सूक्त, राष्ट्रगान 22/22
अथर्ववेदः भूमि सूक्त के आधार पर पृथ्वी की वैदिक अवधारणा
राष्ट्राभिवर्द्धन, सामनस्य, कृमिनाशनम् सूक्तों का प्रतिपाद्य
काल, उच्छिष्ट , स्कंम्भ , ज्येष्ठ ब्रह्म सूक्तों का प्रतिपाद्य एवं दार्शनिकता

तृतीय खण्डः (ऐतरेय एवं शतपथ ब्राह्मण)

ऐतरेय ब्राह्मण अध्याय 33– शुनःशेप आख्यान का महत्व
शतपथ ब्राह्मण 1/8,मनुमत्स्य आख्यान के आधार पर सृष्टिरचना
शतपथ ब्राह्मण – वाङ्मनस् संवाद का प्रतिपाद्य व वैशिष्ट्य
शतपथ ब्राह्मण – अग्निहोत्र ब्राह्मण का प्रतिपाद्य व वैशिष्ट्य

चतुर्थ खण्डः (गोपथ ब्राह्मण एवं सामवेदीय ब्राह्मण)

गोपथ ब्राह्मण के अनुसार गायत्री, ओंकार, महिमा एवं व्याकरण पारिभाषिक शब्दावली
सामवेदीय, ताण्ड्य ब्राह्मण, महा ब्राह्मण का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्ट्य
दर्शपौर्णमास, इष्टि का परिचय एवं वैशिष्ट्य
प्रवर्ग्य, पुरूषमेध, सर्वमेध, के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिपादित सृष्टि का रहस्य

प्रथम वर्ष (अनिवार्य)
तृतीय पाठ्यक्रम– आरण्यक एवम् उपनिषद्

08 क्रेडिट

प्रथम खण्ड : आरण्यक - परिचय एवं प्रतिपाद्य

ऐतरेय आरण्यक – प्राणविद्या
तैत्तिरीय आरण्यक 2. 1 से 10 कण्डिका कुष्माण्ड होम
तैत्तिरीय आरण्यक 2. 11 से 20 कण्डिका कुष्माण्ड होम
वृहदारण्यक का प्रतिपाद्य

द्वितीय खण्ड : ऋक् एवं सामवेदीय उपनिषद्

ऐतरेयोपनिषद् का प्रतिपाद्य
केनोपनिषद्
छान्दोग्योपनिषद् तृतीय अध्याय – देवमधु के रूप में सूर्योपासना
छान्दोग्योपनिषद् चतुर्थ अध्याय
छान्दोग्योपनिषद् सप्तम अध्याय – नारद सनत्कुमार संवाद

तृतीय खण्ड : यजुर्वेदीय उपनिषद्

ईशावास्योपनिषद् – मन्त्र संख्या 01 से 09 तक व्याख्या
ईशावास्योपनिषद् – मन्त्र संख्या 10 से 18 तक व्याख्या
वृहदारण्यकोपनिषद् – मधुविद्या ब्राह्मण
वृहदारण्यकोपनिषद् – मैत्रेयी याज्ञवल्क्य संवाद
तैत्तिरीय उपनिषद् – शिक्षावल्ली
तैत्तिरीय उपनिषद् – ब्रह्मानन्द वल्ली

चतुर्थ खण्ड : यजुर्वेदीय उपनिषद्

माण्डुक्योपनिषद् का प्रतिपाद्य
मुण्डकोपनिषद् – प्रथम अध्याय
मुण्डकोपनिषद् – द्वितीय अध्याय
प्रश्नोपनिषद् का प्रतिपाद्य – भाग 01
. प्रश्नोपनिषद् का प्रतिपाद्य – भाग 02
कठोपनिषद् का मुख्य प्रतिपाद्य

प्रथम वर्ष (अनिवार्य)

चतुर्थ पाठ्यक्रम–निरुक्त एवं प्रातिशाख्य

08 क्रेडिट

प्रथम खण्ड : निरुक्त प्रथम अध्याय

निरुक्त एवं निघण्टु का सम्बन्ध ,निरुक्तकार का परिचय
निरुक्त : चार पद,षड् भावविकार ,वेद की अर्थवत्ता
उपसर्ग एवं निपातों का परिचय,उपसर्ग विषयक मत
निरुक्त का प्रयोजन
भाषाविज्ञान के मूल सिद्धान्त

द्वितीय खण्ड :निर्वचन सिद्धान्त एवं देवस्वरूप

निर्वचन की भारतीय परम्परा एवं यास्क का निर्वचन सिद्धान्त
मन्त्र एवम् उनके विविध प्रतिपाद्य
यास्क के अनुसार पृथ्वी,अन्तरिक्ष,द्युस्थानीय देवताओं का स्वरूप एवं प्रकार
देवता आकार चिन्तन
अग्नि,वैश्वानर,जातवेदस् ,मातरिश्वन् का स्वरूप निरूपण

तृतीय खण्ड : प्रातिशाख्य भाग एक

प्रातिशाख्य का अर्थ प्रयोजन एवं शाखागत प्रातिशाख्यों का परिचय
ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार संज्ञाएं
ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार परिभाषाएं
ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार वैदिक स्वर – उदात्त, अनुदात्त, स्वरित
प्रातिशाख्यों के अनुसार स्वर –व्यञ्जन सन्धि

चतुर्थ खण्ड : प्रातिशाख्य भाग दो

ऋक् प्रातिशाख्य –शिक्षा पटल
प्रातिशाख्यों के अनुसार वेदाध्ययन प्रक्रिया
वाजसनेयि प्रातिशाख्य का प्रतिपाद्य देवता
शौनककृत वृहद्देवता के अनुसार वेद एवं वैदिक देवता
अनुक्रमणी साहित्य का परिचय

कार्यक्रम – एम0 ए0 वैदिक अध्ययन

द्वितीय वर्ष–(अनिवार्य)

पञ्चम पाठ्यक्रम –छन्दस् एवं कल्प

08 क्रेडिट

प्रथम खण्डः (पिङ्गल छन्दः सूत्र)

प्रथम अध्याय का प्रतिपाद्य
द्वितीय अध्याय का प्रतिपाद्य
तृतीय अध्याय का प्रतिपाद्य
चतुर्थ अध्याय का प्रतिपाद्य

द्वितीय खण्डः (श्रौत सूत्र)

यज्ञ का स्वरूप, संस्थाएं एवं दीक्षाव्रत का विवेचन
अग्न्याधान और अग्निहोत्र का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
सोमयाग संस्था : अर्थ, स्वरूप एवं उपादेयता
पशुयाग का स्वरूप एवं महत्व

तृतीय खण्डः (गृह्य सूत्र)

स्थालीपाक एवं होमविधि का स्वरूप
विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म
नामकरण, निष्क्रमण, चूडाकरण, उपनयन
केशान्त, समावर्तन , और्ध्वदैहिक क्रिया एवं अन्त्येष्ठि
संस्कारों का वैज्ञानिक पक्ष

चतुर्थ खण्डः (धर्मसूत्र)

ब्रह्मचर्याश्रम धर्म : अर्थ, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
गृहस्थ धर्म : अर्थ, स्वरूप एवं कर्तव्य
वानप्रस्थ धर्म का स्वरूप एवं वानप्रस्थी के कर्तव्य
सन्यास धर्म : अर्थ, स्वरूप एवं सन्यासी के कर्तव्य
धर्मसूत्रों के आधार पर राजधर्म का विवेचन

द्वितीय वर्ष–(अनिवार्य)
षष्ठ पाठ्यक्रम –वेदाध्ययन परम्परा

08 केडिट

प्रथम खण्ड : (ऋग्वेदभाष्यभूमिका)

वेद का अपौरुषेयत्व विचार
मन्त्र स्वरूप विमर्श
ब्राह्मण स्वरूप विमर्श
वेदांगों की उपयोगिता

द्वितीय खण्ड : (मीमांसा)

वेद एवं धर्म का स्वरूप
भावना विमर्श
विधि एवम् अर्थवाद
निषेध विवेचन

तृतीय खण्ड : (वेद के पारम्परिक भाष्यकार एवं व्याख्याकार)

स्कन्द,नारायण,उद्गीथ,
वेंकटमाधव, सायण, आत्मानन्द, करपात्रस्वामी
उव्वट, महीधर, भट्टभास्कर
अरविन्द, कपालीशास्त्री , मधुसूदन ओझा
स्वामी दयानन्द, सातवलेकर,

चतुर्थ खण्डः (पाश्चात्य व्याख्याकार)

विल्सन,रॉथ,मैक्समूलर
होल्डेनवर्ग, ग्रीफिथ,ह्विटने,लुडविक,गेल्डनर
हीलेब्राण्ट,ओल्डेनवर्ग,ब्लूमफील्ड, कीथ
. के ई रेनू तथा अन्य व्याख्याकार
वैदिक पदानुक्रमकोश का परिचय

द्वितीय वर्ष
सप्तम् पाठ्यक्रम – वैदिक देवतत्व एवं विज्ञान

08 क्रेडिट

प्रथम खण्ड : (वैदिक देवशास्त्र)

वैदिक देवताओं का वर्गीकरण
पृथ्वी स्थानीय देवता– स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
अन्तरिक्ष स्थानीय देवता– स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
द्युस्थानीय देवता– स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
वैदिक एवम् ईरानी देवताओं का अन्तःसम्बन्ध

द्वितीय खण्ड : (देववाद एवं मान्यताएं)

एकदेववाद की अवधारणा एवं वैशिष्ट्य
. बहुदेववाद की अवधारणा एवं वैशिष्ट्य
सर्वदेववाद की अवधारणा एवं वैशिष्ट्य
देववाद की प्रचलित मान्यताओं का परीक्षण
वैदिक एवं पौराणिक मान्यताओं का अन्तःसम्बन्ध

तृतीय खण्ड : (वेद प्रतिपादित ज्ञान–विज्ञान का स्वरूप)

ज्ञान एवं विज्ञान की अवधारणा
वेदों में शरीर विज्ञान
वैदिक पदार्थ विज्ञान
वैदिक प्रौद्योगिकी
वैदिक चिकित्सा विज्ञान का स्वरूप
वैदिक चिकित्सा विज्ञान तथा आधुनिक चिकित्सा के परिणाम
वेद में भौतिक एवं रसायन के तत्व

चतुर्थ खण्डः (वैदिक विज्ञान के विविध आयाम)

वैदिक पर्यावरण का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
वैदिक वनस्पति विज्ञान का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्ट्य
वैदिक शिल्प का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
वैदिक धातुविज्ञान का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्ट्य
वैदिक वाङ्मय में वास्तुविद्या एवं स्थापत्य का स्वरूप
वैदिक कृषि विज्ञान का स्वरूप
संगीत की वैज्ञानिक अवधारणा

द्वितीय वर्ष
अष्टम् पाठ्यक्रम – वैदिक गणित एवं सृष्टिविज्ञान
08 केडिट

प्रथम खण्ड : (वैदिक गणित : परिचय एवं शास्त्रीयता)

वैदिक गणित का शास्त्रीय आधार और नियम (लगध का वेदांग ज्योतिष, अंकगणित)
गणित के तकनीकी शब्द– बीजगणित,कलन,संख्या,अंक,शून्य, अनन्त,दशमलव,
वर्ग–वर्गमूल,घन–घनमूल
उत्तरवैदिक कालीन भारतीय गणित (जैन, बौद्ध आदि)
लीलावती भाग एक– परिभाषा प्रकरण 01–05 पद्य
लीलावती भाग दो – अंकों का स्थानीय मान तथा योगविधि
आर्यभट्ट गणितपाद 01 –05 पद्यों का विवेचन
अंकगणित का उद्भव एवं विकास

द्वितीय खण्ड : (भारतीय गणितज्ञ एवं बीजगणित)

आर्यभट्ट एवं ब्रह्मगुप्त का परिचय व कर्तृत्व
महावीर आचार्य तथा श्रीपति का परिचय व कर्तृत्व
वररुचि, श्रीधराचार्य, श्रीनिवासरामानुजन, भारतीकृष्णतीर्थ,
भारतीय बीजगणित : उद्भव , बीजगणित के विभिन्न आचार्य
वैदिक बीजगणित में सूत्रों – उपसूत्रों के अनुप्रयोग
लीलावती के आधार पर बीजगणित का वर्णन

तृतीय खण्ड : (वैदिक ज्यामिति तथा त्रिकोणमिति)

भारतीय रेखागणित तथा त्रिकोणमिति का उद्भव एवं विकास
बोधायन शुल्बसूत्र का परिचय एवं प्रतिपाद्य
कोण,लम्ब, कर्ण एवं वृत्त का स्वरूप
सूर्यसिद्धान्त और आर्यभटीयम् के अनुसार ज्यामिति तथा त्रिकोणमिति
ज्यामिति तथा त्रिकोणमिति के आचार्यों का परिचय व सिद्धान्त

चतुर्थ खण्डः (वैदिक सृष्टिविज्ञान)

सृष्टि की परिकल्पना व अवधारणा के वैदिक आधार
सृष्टि की उत्पत्ति में हिरण्यगर्भ की अवधारणा व प्रसरण
वैदिक साहित्य में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के सिद्धान्त व सृष्टि संरचना का स्वरूप
(विराट पुरुष,ब्रह्मवाद, विश्वकर्मा, प्रजापति)
वेदांगो में सृष्टि प्रक्रिया का स्वरूप
ब्रह्माण्ड के स्थूल अवयव–आकाशगंगा, निहारिका,तारापुंज,सौरपरिवार, पृथ्वी
आधुनिक सिद्धान्त –स्थिर ,विस्फोट, स्पन्दनशील
सृष्टि की उत्पत्ति के प्राचीन व आधुनिक सिद्धान्तों की समीक्षा